ईश्वर के सम्बन्ध में प्रश्न

ईश्वर ने हमें क्यों पैदा किया ?

हम में से प्रत्येक व्यक्ति स्वीकार करेगा कि हमारे शरीर के अंगों, जैसे आँख, कान, दिल, दिमाग़ आदि का कोई न कोई उद्देश्य है। तो क्या ऐसा नहीं होगा कि समग्र रूप में व्यक्ति का भी कोई न कोई उद्देश्य हो ?

सर्वबुद्धिमान ईश्वर ने हमें यूँ ही बेकार और निरुद्देश्य घुमते रहने के लिए पैदा नहीं किया है और न ही इसलिए पैदा किया है कि हम केवल अपनी नैसर्गिक आवश्यकताओं की पूर्ती में ही लगे रहें, बल्कि वह बताता है कि यह जीवन एक परीक्षा है। यहाँ पर हर व्यक्ति की परीक्षा ली जा रही है कि कौन ईश्वर को पहचानता और उसके मार्गदर्शन के अनुसार जीवन व्यतीत करता है। ईश्वर कहता है:

> वास्तव में हमने (अर्थात ईश्वर ने) इन्सान को पैदा किया.....ताकि उसकी परीक्षा लें और इसके लिए हमने उसे सुनने और देखने की शक्ति दी। वास्तव में हमने उसे मार्ग दिखाया, अब वह चाहे कृतज्ञ बने चाहे कृतघ्न। (क़ुरआन ७६:२-३)

बहुत-से लोगों के लिए ईश्वर में आस्था रखना कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है बल्कि इस सम्बन्ध वे उलझन के शिकार हैं। इसका अर्थ यह होगा कि किसी के कामों का लेखा-जोखा रखा जाना और निर्णय किया जाना उन लोगों के लिए अत्यन्त असुविधाजनक होगा जो अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। इसलिए इस जीवन में परीक्षा लिए जाने का अर्थ है अपनी इच्छाओं, गर्व और अहंकार के मुक़ाबले में ईश्वर के आदेशों का पालन करना और उसके सामने झुक जाना।

ईश्वर को हमारी परीक्षा की क्या आवश्यकता है ?

ईश्वर को किसी भी चीज़ की कोई आवश्यकता नहीं है। उसे न किसी को पैदा करने की आवश्यकता है और न किसी की परीक्षा लेने की। न तो हमारे उस पर विश्वास करने से उसे कोई लाभ होनेवाला है और न हमारे उसके न मानने से उस पर कोई प्रभाव पड़नेवाला है। जबकि यह उसकी असीम बुद्धिमत्ता एवं विवेक का ही अंश है कि उसने हमें पैदा किया और हमें अपने को पहचानने का अवसर दिया। बात वास्तव में यह है कि ईश्वर को भविष्य का पूर्ण ज्ञान है कि हम किस प्रकार जीवन व्यतीत करते हैं, जीवन में क्या अनुभव करते हैं और किन कामों को अपनाते हैं।

क्या वास्तव में हम स्वतन्त्र हैं ?

यह तथ्य कि ईश्वर हमारी इच्छा को जानता है, हमारी स्वेच्छा में कमी नहीं करता। यद्यपि ईश्वर चाहता है कि लोग उसमें विश्वास करें, परन्तु वह इसके लिए किसी को बाध्य नहीं करता। यदि ईश्वर चाहता तो पूरी मानव जाती को मार्गदर्शित कर देता क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है। किन्तु अपनी प्रज्ञा में उसने हमें निर्णय शक्ति के साथ पैदा किया और अपने चुनाव के लिए स्वयं को उत्तरदायी बनाया।कोई ज़रूरी नहीं है कि ईश्वर हर उस काम से प्रसन्न हो जिसे उसने हमें करने की आज़ादी दी है।

ईश्वर स्वयं क्यों नहीं उतरता है ?

अपनी प्रज्ञानुसार ईश्वर ने अपने पहचानने का जो रास्ता चुना है वह निशानियों का है। यह जीवन की परीक्षा का मार्ग है। उसने हमें इस बात के लिए ज़िम्मेदार बनाया है कि उसने जो योग्यताएँ हमें प्रदान की हैं उनका प्रयोग करके उसे जानें और पहचानें। इसका अर्थ यह है कि जो लोग समझदार हैं, विनम्र हैं और गम्भीरता के साथ सोच-विचार करते हैं वे उसे पहचान लेंगे और उसपर विश्वास करेंगे।

संसार में कष्ट क्यों है ?

यह तथ्य कि विभिन्न योग्यताएँ देकर विभिन्न तरीक़ों से लोगों की परीक्षा ली जाती है, न तो ईश्वर के अस्तित्व को असत्य प्रमाणित करता है और न ही सर्वशक्तिमान ईश्वर का खंडन करता है। बल्कि कुछ भी अच्छा या बुरा करने की जो आज़ादी ईश्वर ने दी है वह धरती पर हमारी परीक्षा की पुष्टि करती है। हमारे साथ जो कुछ होता है उसे हम नियन्त्रित नहीं कर सकते, परन्तु हम यह जान सकते हैं कि उस पर प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त करें, जिससे कि वह हमको परख सके। यह संसार अस्थायी एवं अल्पकालिक है, फिर भी मरने के बाद के जीवन में जो न्याय और इन्साफ़ हमेशा और सदैव के लिए मिलेगा वह इस संसार में होनेवाले अन्याय एवं अवदशा की क्षतिपूर्ती कर देगा।

ईश्वर लोगों को दण्ड क्यों देता है ?

दण्ड की अवधारणा से कोई इनकार नहीं कर सकता, जो कि न्याय के लिए महत्वपूर्ण है। ईश्वर ने हमको विभिन्न योग्यताओं के साथ पैदा किया कि हम यह तय कर सकें कि किस तरह जीवन व्यतीत करना चाहते हैं ताकि हम ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी हों।

इस्लाम एक बहुत ही व्यावहारिक धर्म है जो हमें ईश्वरीय दण्ड के भय और ईश्वर की कृपा की आशा के मध्य सन्तुलन बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करता है- एक सकारात्मक एवं विनम्र जीवन व्यतीत करने के लिए हमें दोनों पहलुओं की आवश्यकता है। ईश्वर अत्यन्त कृपाशील और दयावान है किन्तु अत्यन्त न्यायशील भी है। यदि न्याय का कोई दिन निश्चित न हो तो ईश्वर की पूर्ण एवं उचित न्याय-व्यवस्था के विपरीत होगा और इससे जीवन अनुचित हो जाएगा।

निष्कर्ष

क्या हम यहाँ पर केवल 70-80 या कुछ और सालों के लिए हैं, और क्या वास्तव में ऐसा ही है ? या हमारे जीवन के लिए और भी कुछ है ? क्या हम एक विकसित वानर मात्र हैं, जिसके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं ? क्या हम कोई भौतिक वस्तु मात्र हैं जिसकी कुछ शारीरिक आवश्यकताएँ होती हैं या हमारी कुछ आध्यात्मिक आवश्यकताएँ भी हैं ? उन लोगों के लिए जो निष्ठावान हैं और अभी तक ईश्वर के सम्बन्ध में अनिश्चित हैं, हमारा सुझाव है कि वे अपने-आपसे कहें कि-हे ईश्वर, यदि तेरा अस्तित्व है तो तू हमारा मार्गदर्शन कर। निश्चित रूप से आप परिणाम देखकर आश्चर्यचकित होंगे।

नास्तिकता

इस्लामिक दृष्टिकोण

शीघ्र ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ बाह्य क्षेत्रों में दिखाएँगे और स्वयं उनके अपने भीतर भी, यहाँ तक कि उनपर स्पष्ट हो जाएगा कि वह (क़ुरआन) सत्य है। ..... (क़ुरआन 41:53)

हमसे सम्पर्क करें

इस्लामिक इन्फ़ॉरमेशन सेंटर

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000

040 - 6832 7832

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

इस पैम्फ़लेट में ईश्वर में विश्वास सम्बन्धी इस्लामी दृष्टिकोण का परिचय कराया गया है। इसमें बताया गया है कि ईश्वर ने किस प्रकार प्रकृति की रचना और प्रकाशना द्वारा अपने अस्तित्व के प्रमाण उपलब्ध कराए हैं। इस पैम्फ़लेट में ईश्वर का इनकार करनेवालों (नास्तिकों) के द्वारा किये गए प्रश्नों को भी स्पष्ट किया गया है ।

ईश्वर अपनी निशानियों द्वारा उसको पहचानने के लिए हमें बुलाता है और इस पर सोच-विचार करने की ज़िम्मेदारी देता है ताकि हम उसे पहचान सकें। कुछ लोग इन निशानियों को पहचान लेते हैं और अपने चारों तरफ़ ईश्वर की रचनाओं को देखते हैं, जबकि कुछ दूसरे इन सब निशानियों को अर्थहीन और अटकलपच्चू समझकर रद्द कर देते हैं। ईश्वर ने हर मनुष्य के अन्दर ईश्वर को मानने की प्रवृत्ति रखी है, परन्तु या तो मनुष्य इस जन्मजात प्रवृत्ति को पोषित करता है या उसे दबा देता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि ईश्वर उन लोगों का मार्गदर्शन करता है जो निष्ठावान हैं और वास्तव में ही उसका मार्गदर्शन चाहते हैं। दूसरे शब्दों में यह कि जो लोग ईश्वर में विश्वास रखना ही नहीं चाहते ईश्वर उनका मार्गदर्शन भी नहीं करता। "अपनी ओर तो वह मार्गदर्शन उसी का करता है जो उसकी ओर पलटता है।" (क़ुरआन १३:२७)

ईश्वर के अस्तित्व की सम्भावना के लिए वस्तुनिष्ठता और निष्पक्ष दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो कि कुछ लोगों का मुक़ाबला करने और विनम्रता दिखाने के लिए पर्याप्त हो, परन्तु इस विशुद्ध स्पष्टता और तत्परता के बिना मात्र जानकारी प्राप्त कर लेना किसी के अन्दर ईश्वर में विश्वास पैदा नहीं कर सकता। वास्तव में ईश्वर हमें सावधान करता है कि जो लोग अपने गर्व और अहंकार की स्थिति से निकलकर उसकी निशानियों तक पहुँच जाते हैं वे केवल अपने अविश्वास के औचित्य पा लेंगे। यहाँ पर यह बात नोट कर लेना भी महत्वपूर्ण है कि ईसाइयत पर जो आलोचनाएँ हुई हैं वे इस्लाम पर चरितार्थ नहीं होती हैं, क्योंकि इस्लाम और ईसाइयत में उल्लेखनीय अन्तर पाया जाता है। अतः हम आशा करते हैं कि जो लोग निष्ठावान तथा उदारचित्त हैं वे यदि पूर्वाग्रह से मुक्त होकर विशुद्ध मन से सत्य की खोज करते हैं, वे अपनी जानकारियों से लाभान्वित हो सकते हैं और इससे ईश्वर को एक नए परिप्रेक्ष्य में समझने में सहायता मिल सकती है।

ईश्वर में विश्वास के कारण

सृष्टिकर्ता ईश्वर में विश्वास के निम्नलिखित तीन तर्कसंगत कारण हैं

1.सृष्टि का आरम्भ

सृष्टिकर्ता ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करने हेतु पहले प्रमाण का सम्बन्ध इस सृष्टि के आरम्भ को समझने से है। कल्पना कीजिए कि रेगिस्तान में टहलते हुए आपको एक घड़ी मिल जाती है। हम जानते हैं कि शीशे, प्लास्टिक और धातु से मिलकर घड़ी बनती है। शीशा बालू से बनता है, प्लास्टिक तेल से और धातु ज़मीन से निकलता है- और ये सारे अवयव रेगिस्तान में पाए जाते हैं। क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि घड़ी स्वयं ही बन गई होगी? तेल धरती पर आया और रेत तथा धातु में मिल गया और फिर लाखों सालों के बाद अचानक प्राकृतिक संयोग द्वारा घड़ी अस्तित्व में आगई? आधुनिक विज्ञान के अनुसार इस सृष्टि का अन्त भी है और आरम्भ भी। अब प्रश्न यह है कि आख़िर यह सृष्टि आई कहाँ से? मानव अनुभव और साधारण बुद्धि हमें बताती है कि जिस चीज़ का आरम्भ होता है वह साधारणतः शून्य से अस्तित्व में नहीं आती, न ही वह स्वयं बन जाती है। इस कारण हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि कैसी महान 'सत्ता' ने इस सृष्टि को पैदा किया है। यह 'सत्ता' निश्चित ही शक्तिशाली और बुद्धिसम्पन्न होगी क्योंकि वह इस पूरी स्रष्टि को अस्तित्व में लाया और इसके लिए 'वैज्ञानिक नियम' बनाए जो इस सृष्टि को नियन्त्रित करते हैं। हमें इस बात का भी पता चलता है कि यह सत्ता कालातीत भी है और स्थानातीत भी, क्योंकि समय, स्थान और पदार्थ से ही इस सृष्टि का निर्माण हुआ है। इन सभी गुणों से उस ईश्वर की आधारभूत अवधारणा वुजूद में आती है जो इस सृष्टि का सृष्टिकर्ता है। कोई कह सकता है कि फिर ईश्वर को किसने पैदा किया? ईश्वर जो सृष्टि का रचयिता है, अपनी सृष्टि से भिन्न है। ब्रह्माण्ड और शेष सृष्टि की अपेक्षा ईश्वर अत्यन्त भिन्न है जिसका अस्तित्व सदैव से है।

2. ब्रह्माण्ड की परिपूर्णता

सृष्टि के रचयिता ईश्वर के अस्तित्व का दूसरा प्रमाण ब्रह्माण्ड की परिपूर्णता और इस जटिल ब्रह्माण्ड में पाया जानेवाला सन्तुलन है। क्या इतना बड़ा और जटिल ब्रह्माण्ड बिना किसी की देख-रख के मात्र संयोगिक घटना के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आ सकता है?

इस ब्रह्माण्ड में बहुत-से गुण और लक्षण स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं कि जीवन के आश्रय हेतु इस सृष्टि की रचना अत्यन्त सुनियोजित ढंग से की गई है। जैसे कि सूर्य से प्रथ्वी की दूरी, प्रथ्वी के पृष्ठ की मोटाई; प्रथ्वी के घूमने की गति; वातावरण में ऑक्सीजन का प्रतिशत, यहाँ तक कि प्रथ्वी का झुकाव। इस सृष्टि में जो पैमाइश इस समय पाई जाती है यदि इनमें मामूली सा भी अन्तर आ जाए तो जीवन का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है।

यदि एक घड़ी समय ठीक बता रही है तो इसका अर्थ यह है कि उसके बनानेवाला कोई बुद्धिमान है; बिलकुल इसी प्रकार यदि प्रथ्वी सूर्य के चारों ओर बिलकुल ठीक समयानुसार चक्कर लगा रही है तो यह भी निश्चित रूप से सत्य है कि इसका भी कोई बनानेवाला ज़रूर है। क्या यह सब कुछ स्वयं ही हो रहा है?

जब हम अपने अन्दर और इस कायनात में यथार्थ नियम तथा व्यवस्था देखते हैं तो क्या बुद्धि पुकार नहीं उठती कि इनका कोई व्यवस्थापक है ? यही "व्यवस्था" है जिसने ईश्वर के अस्तित्व को बहुत अच्छी तरह से समझाया कि वही ईश्वर है जो इस यथार्थ नियम को वुजूद में लाया है।

यहाँ पर यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि इस्लाम वैज्ञानिक अनुसन्धान एवं मीमांसा को प्रोत्साहित करता है। विज्ञान की भूमिका हमें इस बात की व्याख्या करने में सहायता करती है कि इस सृष्टि में ईश्वर ने बहुत-से प्रतिमान रखे हैं और उसकी शक्ति के विस्तार एवं बुद्धिमत्ता की सराहना करती है।

3.ईश्वरीय अवतरण

यथार्थ एवं वास्तविक अवतरण तीसरा प्रमाण है जो कि ईश्वर की ओर से अपने अस्तित्व के लिए पूरी मानव जाती की ओर निशानी के रूप में दिया गया है।

क़ुरआन का बहुत-से उद्देश्यों में से एक उद्देश्य लोगों को इस ओर आमन्त्रित करना है कि लोग ईमान लाकर ईश्वरीय की स्तुति और सराहना करें। पूरे क़ुरआन में ईश्वर हमारा ध्यान अपनी अद्भुत रचना और इस सृष्टि तथा स्वयं मनुष्य के भीतर पाई जानेवाली जटिलताओं की ओर आकर्षित कराता है, जो इस बात की ओर संकेत करने के लिए पर्याप्त है कि हम उसी रचना, उद्देश्य और प्रज्ञा का परिणाम हैं। उदहारण के लिए ईश्वर कहता है:

"निस्सन्देह आकाशों और धरती की संरचना में, और रात और दिन के आने और जाने में, और उन नौकाओं में जो लोगों की लाभप्रद चीज़ें लेकर समुद्र (और नदी) में चलती हैं, और उस पानी में जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर जिसके द्वारा धरती को उसके निर्जीव हो जाने के पश्चात जीवित किया और उसमें हर एक (प्रकार के) जीवधारी को फैलाया और हवाओं को गर्दिश देने में और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच (काम पर) नियुक्त होते हैं, उन लोगों के लिए कितनी ही निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें." (क़ुरआन २:१६४)

इसके अतिरिक्त ईश्वर के अस्तित्व का यह भी एक स्पष्ट प्रमाण है कि क़ुरआन ईश्वरीय वाणी है.

क़ुरआन

विरोधाभास से मुक्त है

दुनिया की यह अद्वितीय पुस्तक है जो अपने अवतरण से लेकर आज तक शब्दशः अपनी मूल भाषा अरबी में पूर्ण रूप से सुरक्षित है,

अपने-आप में अत्यन्त साधारण, शुद्ध तथा विश्वव्यापी सन्देश रखता है जो मानव-बुद्धि को अपील करता है और जिसके अन्दर सर्वशक्तिमान ईश्वर पर विश्वास निहित है।

बहुत-से वैज्ञानिक तथ्य इसके अन्दर ऐसे मौजूद हैं जिनसे उस समय के लोग अनभिज्ञ थे और जिनकी अभी कुछ ही समय पहले वैज्ञानिकों ने खोज की है। उदहारण के रूप में प्रत्येक जीव की उत्पत्ति पानी से हुई है। (क़ुरआन २१:३०); इस संसार का निरन्तर विस्तार हो रहा है। (क़ुरआन ५१:४७) तथा सूर्य और चन्द्रमा अपनी-अपनी धुरी पर घूम रहे हैं। (क़ुरआन २१:३३)

ऐसी ऐतिहासिक घटनाएँ इसके अन्दर मौजूद हैं जिनको उस समय के लोग नहीं जानते थे, इसी के साथ-साथ बहुत-सी ऐसी भविष्यवाणियाँ इस किताब के अन्दर की गई हैं जो बाद में सत्य सिद्ध हुईं।

क़ुरआन वह किताब है जिसने लोगों पर सबसे अधिक और गहरे प्रभाव डाले हैं।पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतरित हुआ जो पढ़े-लिखे नहीं थे, परन्तु भाषा की वह अद्भुत शैली इसके अन्दर पाई जाती है जो विश्व स्तर पर भाषाई सुन्दरता और अरबी वाग्मिता एवं वाकपटुता के शिखर पर है।

क़ुरआन के बहुत-से अद्भुत तथा चमत्कारपूर्ण पहलुओं की तर्कसंगत एवं बुद्धिपरक व्याख्या बताती है कि यह क़ुरआन ईश्वर की ओर से ही हो सकता है।